Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

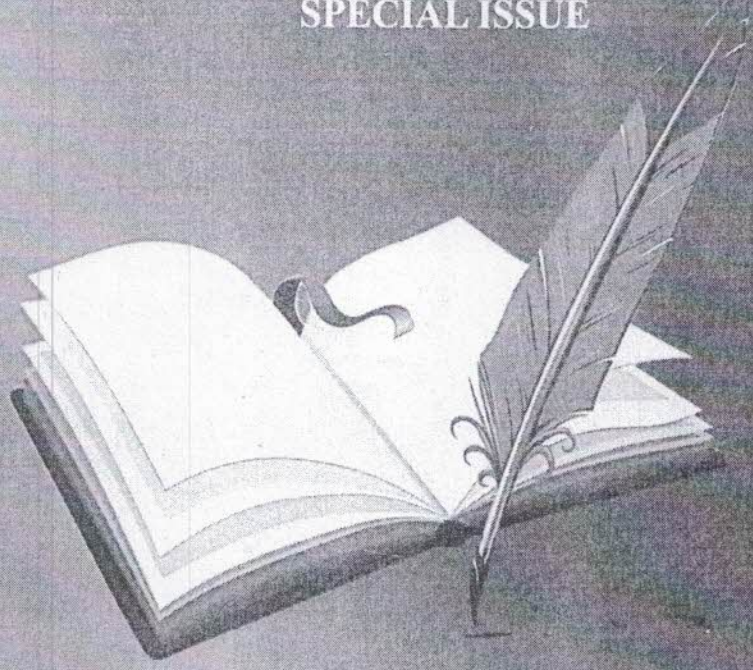

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Guest Editor
Dr.P.K.Koparde
Dr.V.V.Arya

Chief Editor
Dr.Dhanraj T.Dhangar
Assist.Prof.(Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College, Yeola,
Dist.Nashik (M.S.)

Scanned by CamScanner

20	21 वीं सदी का ग़ज़ल साहित्य – प्रा. डॉ. वंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	78
21	मंजुल भगत की कहानियों में नारी विमर्श प्रा.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव	82
22	बाल साहित्य : एक विमर्श –डॉ. अर्चना परदेशी	85
23	21 वीं सदी का हिन्दी आत्मकथाओं में नारी विमर्श – डॉ. के. श्याम सुन्दर	88
24	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता (नारी विमर्श के विशेष संदर्भ में) प्रा.डॉ. बळीराम राख	91
25	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में व्यक्त स्त्री... – प्रा. डॉ. देशपांडे व्ही.व्ही.	93
26	'दोहरा अभिशाप' : दलित स्त्री के संघर्ष की.... – डॉ.सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव	96
27	इक्कीसवीं सदी की कविता में नारी संवेदना –प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार	100
28	इक्कीसवीं सदी का व्यंग्य साहित्य – प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल, प्रा.व्यंकट खंदकुरे	104
29	कबूतरीयों की व्यथा : अल्मा कबूतरी –डॉ.रोडे एस.सी.	107
30	"संजीव कृत उपन्यास 'जंगल जहाँ –डॉ. मुनेवर एस. एल. पाटील सुखदेव रामा	109
31	हिजड़ों के अस्तित्व का प्रश्न – डॉ.निम्मी ए.ए.	111
32	पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा में किन्नरों – प्रा.डॉ.पांडुरंग दुकळे	115
33	इक्किसवीं सदी की हिन्दी ग़ज़ल में नारी चेतना के स्वर – डॉ. अविनाश कासांडे	117
34	मधु काँकरिया कृत 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास – प्रा. नटवर संपत तडवी	122
35	श्री नरेष मेहता कृत 'षवरी' में चित्रित समस्या – प्रा, वाघमारे के.एच.	125
36	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में स्त्री संवेदना – प्रा.कुलकर्णी वनिता बाबुराव	128
37	इक्कीसवीं सदी 'का नाटक साहित्य और ममता कालिया –प्रा. घन प्रमोद किशनराव	131
38	21 वीं शती के कहानी साहित्य में स्त्री – प्रा.वालिका रामराव कांबळे	133
39	'गुलाम मंडी' उपन्यास में चित्रित यथार्थवादी परिवेश - अबू होरैरा	136
40	'ग्लोबल गाँव के देवता' (उपन्यास) में चित्रित यथार्थ - इबरार खान	139
41	'आदिवासी' जनजाति की व्यथा :– 'ग्लोवल गाँव के देवता.' –गुंड सचिन मधुकर	143

Scanned by CamScanner

इक्कीसवीं सदी का व्यंग्य साहित्य

प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल
सहयोगी प्राध्यापक,
दयानंद कला महाविद्यालय,
लातूर .

प्रा.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे
सहाय्यक प्राध्यापक,
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
नांदेड .

==========

इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में व्यंग्य साहित्य अपनी ने एक अलग पहचान बनायी है । व्यंग्य आज समकालीन भारतीय साहित्य का मूलाधार माना जाता है । प्राचीन भारतीय साहित्य में व्यंग को ऱ्हास, उपहास, परिहास आदि रूपों में देखा जाता था । आज इक्कीसवीं सदी में व्यंग्य साहित्य की सृष्टी हो रही है, उनके पितामह संत कबीर थे । उन्होंने व्यक्ति, समाज एवं धर्म की बुराईयां एवं पाखंण्डो पर तीखा प्रहार किया है । उनके व्यंग्य में आज भी इक्कीसवी सदी की प्रासंगिकता नजर आती है । आज साहित्य की ऐसी कोई भी विधा नहीं है, उसमे हमें व्यंग्य नजर नहीं आता । चाहे वह उपन्यास हो, कहानी हो, नाटक हो, चाहे कविता हो इन सभी विधाओं में हमें इक्कीसवीं सदी में व्यंग्य दिखाई देता है । आज इक्कीसवीं सदी में कविता तो व्यंग्य की मूलधारा मानी जाती है ।

इक्कीसवीं सदी में व्यंग्य साहित्य आज हमें सभी समस्याओं में व्यंग्य नजर आता है । इक्कीसवीं सदी के व्यंग्य साहित्य में गावों में साधनहिनता, गावों का उजडना, गावों की उपेक्षा, शहरीकरण सामाजिक मूल्यों के नये रूप, बिगड़ता पर्यावरण, आतंकवाद, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, रिश्वतखोरी, आधुनिक स्त्री की स्थिति, हमारी राजनीति, शिक्षा पध्दति, धार्मिक माहौल आदि सभी विषयों पर इक्कीसवीं सदी के व्यंग्य साहित्य में यह स्वर नजर आते हैं । विदेशी असभ्यता पर भी प्रहार इक्कीसवीं सदी के व्यंग्य साहित्य किया गया है । शिक्षित बेरोजगारी, नारी स्वातंत्र्य, युवा पिढ़ी का आक्रोश, पारिवारिक विघटन, व्यक्ति स्वतंत्र्यता की प्रवृत्तियां आदि समस्याओं पर भी व्यंग्य साहित्य आज के युग में हमें दिखाई देता है । इक्कीसवीं सदी के कवि एवं कवयित्री ने सभी विषयों को छुने का काम किया है । व्यंग्य साहित्य में आज स्त्री संवेदना और स्त्री जीवन की त्रासदी, स्त्री विमर्श इस विषय को व्यंग्य में स्थान दिया है । स्त्रीवादी साहित्य में एक नारी की प्रताड़ना, अपमान, तिरस्कार, और हमेशा उसे कमजोर या नीचा दिखाने का प्रयास पुरूष प्रवृतियों व्दारा किया गया है । लेकिन व्यंग्य साहित्य में स्त्री की जो भी भावना है, उसे विद्रोह के रूप में दिखाने का काम इक्कीसवीं सदी के व्यंग्य साहित्य में किया गया है। नारी के प्रति हुऐ अत्याचारों की त्रासदी वेदना को आज अलग–अलग कविताओं में अभिव्यक्त किया गया है।

आज पढ़ लिखकर स्त्री अपनी योग्यता सिध्द कर रही है । आशा प्रभात ' लड़की देह और ख्याल ' इस कविता में व्यंग्यात्मक रूप से अपना मनोभाव व्यक्त करती है ।

" क्यों उपस्थित हो जाती है उसकी देह हर जगह
अपना हुनर , अपनी काबिलियत
उसकी देह
इस कम्बख़्त देह के आगे
किस अदृश्य नकाब के पीछे"

इक्कीसवीं सदी में व्यंग्य साहित्य की चर्चा जोरो–शोरों से हो रही है । रमणिका गुप्ता की कविता में वर्ण व्यवस्था पर तीखा प्रहार व्यंग्यात्मक शैली में किया है ।

" बरगद के नीच, हम छोटे – छोटे पौंधे,
पैदा होते ही जाते हैं मर ।
वट की जड़े मिट्ठी के अंदर घुसकर
हड़प लेती है,
हमारे हिस्से का पानी "

Scanned by CamScanner

इस तरह की कविताओं में आज व्यंग्यात्मक शैली में व्यंग्य साहित्य पनप रहा है । और विकसित होते जा रहा है । अलग--अलग समस्याओं को छु कर इंसानों को सही रास्ता दिखाने का काम व्यंग्य साहित्य आज के युग में कर रहा है । व्यंग्य ही कवियों का अस्त्र है और समाज का लक्ष्य है । जीवन की सभी क्षेत्रों मे व्यवस्था, समाज, राजनिती, धर्म, संस्कृती, राष्ट्रीयता, अन्तरराष्ट्रीयता आदि के प्रति इनके काव्य में व्यंग्य का तीखापन हमें आज दिखाई देता है । इक्कीसवीं सदी के व्यंग्य का क्षेत्र बहुत ही व्यापक रूप धारण करते जा रहा है । जैसे राजनीतिक व्यंग्य, सामाजिक व्यंग्य, राष्ट्रीयता पर व्यंग्य, सांस्कृतिक व्यंग्य एवं अंतराष्ट्रीय व्यंग्य, के रूप में आज का व्यंग्य साहित्य अपना प्रभाव डालता जा रहा है ।

आज के व्यंग्य साहित्य में भ्रष्ट राजनीति एवं नेताओं पर व्यंग्य का तीव्र प्रहार हुआ है । देशभक्ति, देश प्रेम, त्याग एवं बलिदान का पाखण्ड रचकर राष्ट्र के साथ आसानी से राजनीतिक लोग धोखा देते हैं। उसे भी इक्कीसवीं सदी के साहित्य में अभिव्यक्त किया गया है । इक्कीसवीं सदी के साहित्य में व्यंग्य की अभिव्यक्ति साहित्य की अन्य विधाओं से अधिक प्रभावी रुप में हुई है । ऐसा कोई आज के युग का कवि होगा जिसके कविताओं में व्यंग्य नहीं होगा । देश की राजनीति, शासक, उद्योगपति, तथाकथित समाज सेवक, धार्मिक नेता आदि के बीच व्याप्त भष्ट्राचार, आडंबर एवं नैतिकता का पतन हो रहा है , इन सभी विसंगतियों का पर्दाफाश आज के युग के व्यंग्य साहित्य में किया गया है । आज इक्कीसवीं सदी का हर एक कवि अपने युग का विद्रोही कवीर बनता जा रहा है । यह सब व्यंग्य साहित्य की देन है ।

इक्कीसवीं सदी के व्यंग्य साहित्य में साहित्य ही अपने अलग स्तर पर पहुंच गया है । अलग उंचाई को प्राप्त किया है विकास की उंचाईयां अर्थात महासत्ता बनने का सपना तो हम देख रहे है । दूसरी ओर दूरदर्शन, दुरसंचार, फेसबूक, इंटरनेट जैसी चिजों में आज का नवयुवक किस तरह से गुमराह होते जा रहा हैं और अपनी संवेदना को किस तरह से दूर जा रहा है यह प्रभा झा क्री कविता में नवयुवकों के प्रति व्यंग्य लेखिका ने किया है । वे कहती है ।

" गांव के हर चौराहे पर
एक इंटरनेट बुथ या सायबर कॅफे
तकि वह गांव जुड़ सके पूरे विश्व से ।
बन सके एक ग्लोबल विलेज
तब भी बुढ़ा बदरी अपनी निस्तेज आंखो से
घोर हताश निराशा लिए टूटी खाट पर तोड़ेगा दम
और प्रवासी बेटे को सूचना मिलेगी
ई – मेल पर । "

इस तरह अपनी कविता से आज के कवि आज के नवयुवक अपनी माता–पिता के प्रति उदास है । ऐसी प्रवृत्तियों पर प्रहार व्यंग्यात्मक शैली में कवित्री ने किया है ।

आज इक्कीसवीं सदी के व्यंग्य साहित्य में बेकारी के ऊपर बहूत से कवियों ने अपने तीखे प्रहार सुनाऐ हैं । उसी तरह से ज्योति व्यास की कविताओं हमें बेरोजगारी पर व्यंग्य दिखाई देता है । आज का युवक मोहभंग से ग्रासित हुआ है । वही नवयुवक बेकार है और दूसरों के सामने हाथ फैलाने के लिए लाचार है । बेकारी की आग में झूलता है और इस धार्मिक, राजनीतिक, शिक्षा, सामाजिक जैसे चकव्यूह मे अभिमन्यू जैसे फंसते जा रहा है । ज्योति व्यास लिखती है ।

" कोई भी डिग्री न दिला सकी रोजगार
भाई – भतीजावाद में फंसा,
अब तक है बेकार ।
डिग्रियों के चकव्युह में अभिमन्यू फंस गया है
व्यवस्था का काला नाग इसको डस गया है । "

आज की व्यवस्था पर यह कविता यथार्थवादी व्यंग्यात्मक चित्रण व्यक्त करती है । इक्कीसवीं सदी का व्यंग्य साहित्य अवसाद, निराशा, घुटन और पीड़ा को उद्घाटित करता है । आम आदमी की व्यथा से जुड़ा हुआ है । आज वैश्वीकरण के इस दौर में समाज एक ऐसी दशा से गुजर रहा है, जिसमें उसका सब कुछ तहस–नहस होनेवाला है। सिर्फ आज का व्यंग्य साहित्य ही समाज को सही व्यंग्यात्मक उपदेश देकर सही रास्ते पर ले जाने का काम इक्कीसवीं सदीं में होनेवाला है ।

Scanned by CamScanner

व्यंग्यधर्मी मित्रों ! सिंह के समान निर्भीक बनो लेकिन शब्द ब्रम्ह से डरो । नेपोलियन ने कहा है – दुनियां में दो ही ताकते हैं, तलवार और कमल 'अंत में तलवार हमेशा की तरह कलम से हारती है । कलम की नुकिली नोंक तलवार से भी तीखी है । तलवार के तो दो ओर अग्निधार है लेकिन कलम के तो तंहु ओर अंगारों का पथ धार है । इसलिए महादेवी वर्मा ने कहा है ।

" आंसुओं से बडी कोई ज्वाला नहीं,
लेखनी से बड़ी कोई गंगा नहीं ।
दीप चाहे मिट्टी का हो या सोने का,
मूल्य उसकी लौ का है । "

अंधेरे के तरकस का कोई तीर उसकी लौ को नहीं निगल सकता । व्यंग्य साहित्य की ऐसी ही लौ है, जो शिशिर ऋतु की धुप की तरह गुनगुना ताप भी होती है और ग्रीष्म ऋतु की तरह झुलसा भी देती है । बाल के समान पतले इस मार्ग पर चलना सचमुच बहुत ही कठीण कार्य है ।

व्यंग्य विरेचक अस्त्र है जो व्यंजना की भूमि पर अपनी रचनात्मक भूमिका का निर्वाहन करता है । यह जीवन का यथार्थ भाष्य है । इसकी आत्मा में सत्य है, काया में निर्भिकता है, देह पर हास्य महीन वस्त्र है, हाथों में व्यंजना का प्रहारक अस्त्र तथा दृष्टी में शिवम् तेज का व्यंग्य है । व्यंग्य में जीवन के प्रति अनास्था और नैराश्य नहीं होता; बल्कि एक कुशल चिकित्सक का हस्तकौशल्य होता है जो रुग्ण एवं सडे अंग को काट देता है जिससे शेष शरीर स्वस्थ रहता है । व्यंग्य नकारात्मक नहीं है; बल्कि जीवन से सीधा संवाद स्थापित करता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पल–प्रतिपल अंक 57 जुलाई 2003
2. हंस – मार्च 2005
3. लड़की देह और ख्याल – आशा प्रभात
4. प्रगति – प्रभा झा
5. व्यंग्य ही व्यंग्य – बालेन्दु शेखर तिवारी
6. समाज को खाता – अशोक गौतम
7. इक्कीसवीं सदीं का हिंदी काव्य – डॉ. सुभाष क्षीरसागर

Scanned by CamScanner

This Journal is indexed in :

- University Grants Commission (UGC) List No.40705 & 44117
- Scientific Journal Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (CIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)

RESERCH JOURNEY
Multidisciplinary International E-Research Journal

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATION

Scanned by CamScanner